OCTOBER
18
SATURDAY
42nd Week • 291 Day

① 18/10/20

NOTES

B.A. Part I
Hindi Hons
Paper I
Kabirdas —

डॉ॰ अजय कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एस॰ एन॰ सिन्हा कॉलेज
जहानाबाद

प्रश्न :- प्रस्तुत पंक्तियों का सप्रसंग व्याख्या करें —

हरि मेरा पीव माई, हरि मेरा पीव,
हरि बिन रहि न सकै मेरा जीव ॥
हरि मेरा पीव मैं हरि की बहुरिया,
राम बड़े मैं छुटक लहुरिया ॥
किया स्यंगार मिलन कै ताँई,
काहे न मिलौ राजा राम गुसाँई ॥
अब की बेर मिलन जो पाँऊँ
कहै कबीर भौ जलि नहीं आँऊँ ॥

उत्तर :- प्रस्तुत पंक्तियाँ कबीरदास की ~~रचना~~ रचना है। प्रस्तुत पंक्तियाँ मेरी पाठ्य पुस्तक मध्यकालीन हिन्दी काव्य के आलोक में कबीर के पद से ली गयी हैं।

प्रस्तुत पंक्तियों में कबीर की भगवान के प्रति भक्ति भावना को व्यंजित किया गया है। भगवान के प्रति अनन्यता, एकनिष्ठता, दाम्पत्य प्रेम, मिलन की व्याकुलता इत्यादि को प्रस्तुत पंक्तियों में रेखांकित किया गया है।

कबीरदास जी कहते हैं कि हे सखि हरि मेरा प्रिय है। वही मेरा पति है। भगवान के बिना मैं जीवित नहीं रह सकती हूँ। आगे कबीर कहते हैं कि भगवान मेरे

क्रमशः —

OCT 2014
S M T W T F S
1 2 3 4
5 6 7 8 9 10 11
12 13 14 15 16 17 18
19 20 21 22 23 24 25
26 27 28 29 30 31

...not to the strong alone; it is to the vigilant, the active, the brave.

B.A. सेमेस्टर(2) 12/12/20
Hindi Hons कबीर
डॉ० ओमप्रकाश कुमार

पति हैं और मैं भगवान की पत्नी हूँ। राम बड़े हैं और मैं छोटी हूँ। वास्तव में मैं अपने प्रिय से राज-काज कर मिलना चाहती हूँ इसलिए मैंने श्रृंगार किया है। राजाराम मेरे स्वामी हैं। मैं उनसे अवश्य मिलूँगी। इस बार अगर उनसे मेरा मिलन हो गया तो अवश्य ही मैं भवसागर से पार उतर जाऊँगा। इस संसार में मैं दुबारा जन्म नहीं लूँगा।

विशेष—

(1) अन्यत्र भी कबीर कह चुके हैं —
राम मोर पीव मैं राम की बहुरिया
(2) कबीर की भक्ति-भावना पति-पत्नी की है।
(3) कबीर की आत्मा श्रृंगार करके मिलना चाहती है।
(4) बीच की पंक्ति में भक्ति का प्रेम दिखलाया है।
(5) कबीर के राम दशरथ सुत से भिन्न हैं।
(6) प्रस्तुत पद में रहस्यात्मकता है।
(7) पूर्ण समर्पण की भावना है।
(8) सूरदास की भक्ति भावना सख्य भाव की है।
(9) हनुमान की भक्ति भावना सेवक भाव की है।
(10) मीरा की भक्ति भावना पत्नी भाव की है।
(11) कबीर के राम निर्गुण हैं।
(12) भाषा सरल और स्पष्ट है।